IIJ Impact Factor : 2.206 ISSN - 2395-5104

शब्दार्णव

Shabdarnav

An International Peer Reviewed Refereed Journal of Multidisciplinary Research

Year-6 Vol. 11, Part-I January-June, 2020

Scientific Research
Educational Research
Technological Research
Literary Research
Behavioral Research

Editor in Chief
DR. RAMKESHWAR TIWARI
Assist. Professor, Shree Baikunth Nath Pawahari Sanskrit Mahavidyalay
Baikunthpur, Deoria

Executive Editors
Dr. Kumar Mritunjay Rakesh
Mr. Raghwendra Pandey

Published by
Samnvay Foundation
Mujaffarpur, Bihar

- 'दारोश तथा अन्य कहानियां' में व्यक्त हिमाचली संस्कृति — 138–140
  दीपा रानी
- पातंजले ईश्वरचिन्तनम् — 141–148
  Dhrubajyoti Bhattacharjee
- मानवाधिकार का आधार : मानव–मूल्य — 149–150
  डॉ0 मिताली मीनू
- **मुगल साम्राज्य का पतन : कृषक विद्रोहों के संदर्भ में** — 151–153
  डॉ0 सावित्री कुमारी
- आपदा प्रबन्धन : उत्तर बिहार के संदर्भ में — 154–155
  डॉ0 कुमारी रोजी
- सम्राट कनिष्क का राजनैतिक विरासत और सद्धर्म का प्रचार — 156–159
  डॉ0 दीपेन कुमार राय
- मुगल शासकों की दक्षिण नीति — 160–162
  बिनोद कुमार महतो
- मानवाधिकार और एड्स : एक समीक्षात्मक मूल्यांकन — 163–165
  डॉ0 मोनिका कुमारी
- बिहार मे विपरीत प्रव्रजन एवं उसके आर्थिक और सामाजिक आयाम (मनरेगा के विशेष सन्दर्भ मे) — 166–170
  डॉ0 कमलेश कुमार
- सन्ध्यावन्दनविधिप्रसंगे नीलकण्ठ–गोपालन्यायपंचाननमतयोः परिशीलनम् — 171–177
  शुभलक्ष्मी पण्डा
- वर्तमान भारत में महात्मा गांधी के विचारों की व्यावहारिकता और उपादेयता — 178–179
  डॉ0 हीरु फेरवानी
- मैत्रेयी पुष्पा की आत्मकथा : कुछ प्रमुख तथ्य — 180–182
  बॉबी कुमारी
- तिब्बत का प्राचीन धर्म वोन — 183–186
  डॉ0 रविकान्त कुमार
- वज्रयानी साधना में पञ्चतथागत — 187–190
  डॉ0 मालती सिन्हा
- मुखं व्याकरणं स्मृतम् — 191–193
  दीपककुमारः
- सौन्दरनन्दकालीन राजनीतिक पृष्ठभूमि की समीक्षा — 194–197
  डॉ0 संगीता कुमारी
- भारत मे मानवाधिकारों का उल्लंघन — 198–200
  डॉ0 संतोषी कुमारी
- अमीर खुसरो की भाषिक चेतना — 201–203
  डॉ0 अलका कुमारी
- आर्थिक विकास में गृहपतियों की भूमिका — 204–206
  डॉ0 दीपा झा
- भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास में निर्धनता एक चुनौती — 207–209
  डॉ0 अवधेश प्रसाद व जयती वर्मा
- महर्षि दयानन्द सरस्वती की वैदिक लेखन में प्रवृत्ति का कारण — 210–211
  डॉ0 अजीत कुमार
- लोकायत दर्शन में आत्म स्वरूप — 212–213

डॉ0 सुबोध कुमार
- भुवनेश्वर के नाट्य साहित्य में ज्वलन्त समस्या 214–215
शशि शेखर
- तांत्रिक साधना पद्धति की पृष्ठभूमि 216–218
डॉ0 श्वेता पाठक
- बौद्ध योग का पंचशील और आना–पान (प्राणायाम के केन्द्र में) : रोगों से मुक्ति का साधन 219–222
डॉ0 विश्वजीत कुमार नवीन
- संस्कृतलघुनाट्ये आधुनिकनाटकानाम् उद्भवः विवेचनम् 223–224
अनित कुमार दूबे
- व्यवहार अभियोग के क्षेत्र में नारी की भूमिका 225-226
डॉ0 कल्पना कुमारी
- पञ्चांगनिर्माणप्रसंगे ग्रहलाघवानुसारेण सूर्यग्रहणाधिकार निरूपणम् 227-228
डॉ0 रवीन्द्र प्रसाद
- साहित्यशास्त्रे रसस्वरूपम् 229–231
डॉ0 देवनारायण झा
- गांधी जी एवं हरिजन आंदोलनः एक अध्ययन 232-233
डॉ0 कंचन कुमारी
- नारी सशक्तिकरण की समस्याएँ – एक दर्शनशास्त्रीय विश्लेषण 234-235
डॉ0 मनोज कुमार मिश्र
- दर्द और दुःख का मनोवैज्ञानिक पहलू 236-236
डॉ0 शालिनी कुमारी
- संस्कृतसाहित्ये गीतिकाव्यस्योत्पत्तिः विकासः विवेचनम् च 237-238
डॉ0 अर्चना कुमारी
- रघुवंशम् महाकाव्य में सांख्य दर्शन का अवलोकन 239-242
डॉ0 वशिष्ठ सिंह कुशवाहा
- पर्यावरणीय मूल्य : दशा एवं दिशा 243-245
डॉ0 रीता प्रताप
- **Sri Aurobindo : A Man of Higher Consciousness** 246-248
Dr. Rajiv Kumar Singh
- **The Study of Acoustic and Spectroscopic Properties of Melonic Ester with Ethanol at 30⁰C** 249-251
Shivansh Mishra and Dr. Sanjeev Kumar Yadav
- The Effect Of Colours In Kiratarjuniyam (from 1-10 cantos) 252-253
Ria Chatterjee
- **The study of Takman mentionedin the Atharvaveda from the perspective of the *Ayurveda* and the Modern Medicine** 254-256
Dr. Samir B. Kulkarni
- **Charlie Chaplin's The Little Tramp's: A Study from Existentialist Perspective** 257-261
Triloki Nath
- **Assessing Mental Health Problems and Coping Strategies among Retail Workers during the Pandemic COVID-19** 262-267
Shalu Kumari & Maryam Sabreen
- **Sand Seas or Oceans of Sands** 268-271

Anil Kumar Sharma

- **The Greatness of The Works of Srimanavala Mamunigal** 272-276
  Marimuthu
- **Impact of Technology on Farming of Agriculture Production** 277-279
  Ranjeet kumar
- **Female Foeticide in India ; A Serious Challenge for the Society** 280-284
  Dr. Indradeo Singh
- **Modern farming and agriculture production** 285-287
  Niranjan Bharti
- **Gupta Era-The Golden Era of India ; an Analysis** 288-289
  Anant Kumar Madhu
- **British Paramountcy and Start of a New Era** 290-291
  Kamal Kishore Mishra
- **Unification of Germany** 292-293
  Abhishek Kumar
- **Impact of Covid-19 on Indian Economy F.Y. -2020-21** 294-297
  Anil Kumar Dixit
- **Good Governance and Political Will Power** 298-300
  Maiku Ram
- **Impact of E-Banking on Rural India** 301-305
  Minati Kumari

❖

'दारोश तथा अन्य कहानियां' में व्यक्त हिमाचली संस्कृति

• दीपा रानी

सारांश – 'दारोश तथा अन्य कहानियां' संग्रह में हिमाचल के आमजन के जीवन के साथ-साथ हिमाचली संस्कृति की झलक देखी जा सकती है। प्रस्तुत संग्रह में हिमाचली संस्कृति अधिक जीवन्त बन पड़ी क्योंकि इसके लेखक एस.आर.हरनोट ने इसको केवल महसूस ही नही किया बल्कि स्वयं देखा और भोगा भी है और किसी भी कलाकार का अपने जीवन के अनुभवों पर आधारित जो अनुभूत सत्य होता है वही उसके निज की मूल्य दृष्टि बन जाया करती है। लेखक ने अपनी प्रत्येक कहानी में हिमाचल क्षेत्र के धार्मिक विश्वास, सामाजिक जीवन, रीति-रिवाज, खान-पान, गरीबी, शोषण व रोजी रोटी के लिए संघर्ष करते आमजन का यर्थाथ अंकन किया है। जिसको उकेरना ही इस शोध प्रत्र का उद्देश्य है।

भूमिका – हिमाचली संस्कृति पर बात करने से पूर्व संस्कृति पर चर्चा करना अनिवार्य है। संस्कृति का सम्वन्ध मनुष्य से है। मनुष्य ही संस्कृति का निर्माता है। किसी देश अथवा समाज के विभिन्न जीवन व्यापारों में या सामाजिक सम्वन्धों में मानव की दृष्टि से जो आदर्श प्रेरणा करते हैं उनकी समष्टि ही संस्कृति है। सामाजिक जीवन के समस्त क्षेत्रों का समावेश संस्कृति में होता है। भिन्न-भिन्न सभ्यताओं के उत्थान एंव पतन के नाम के लिए संस्कृति ही मानदण्ड है। एक समय था जब संस्कृति के अन्तर्गत कला, स्थापत्य, साहित्य और दर्शन का अध्ययन किया जाता था लेकिन अब संस्कृति में समाज की हर गतिविधि का समावेश होता है। इसी को आधार बनाकर प्रस्तुत संग्रह में हिमाचली संस्कृति को दर्शाया गया है।

धार्मिक संस्कृति – हिमाचल प्रदेश एक धार्मिक क्षेत्र है यहां बहुत से उत्सव मनाए जाते हैं। और मेलों का आयोजन भी होता है। देवता का भी रिश्ता-नाता पास के गावं के देवी-देवता से। साथ के देवता के साथ उनका मेल-मिलाप, लडाई-झगड़ा और उठना बैठना सब कुछ। देवताओं की शक्ति का गुरो में प्रवेश और गुर की वाणी पर सबका अटल विश्वास, अकाल, वर्षा, बीमारी तथा पारिवारिक समस्या पर देवता का आह्वान, मिन्नत-मनौती तथा इच्छापूर्ति पर सहभोज आदि बहुत से धार्मिक पर्व लोगों द्वारा किए जाते है।

पहाड़ी आंचल में आज भी तुलसी के विवाह की परम्परा है। लोक विश्वास है कि तुलसी को आंगन में लगाने का अधिकार 'ब्राह्मणों' का ही है और वही इस डाली का विवाह कर सकते हैं। 'लाल होता दरख्त' में दिखाया गया है कि आंगन की तुलसी का विवाह विधिपूर्वक बेटी के विवाह जैसा होता है। विशेषकर जिस गांव में लोक देवता 'नृसिंह या नारसिंह' देवता का मन्दिर है वहां लोग तुलसी का विवाह परम्परानुसार इस देवता के साथ करते है। गमले में उगाई तुलसी को दुल्हन की तरह इस विवाह में देवता के मंदिर में छोड देते हैं[१] ....

पहाड़ी अंचलों में प्राचीन परम्परानुसार पीपल का विवाह आज भी एक बेटे की तरह होता है। जैसा कि 'लाल होता दरख्त' में दिखाया गया है कि ब्राह्मण लोग इसके अधिकारी माने जाते है लेकिन यदि बाहरी बिरादरी में भी उनकी जमीन में कहीं पीपल कुदरती पैदा हो जाए तो वह भी विवाह कर देते हैं। पीपल का विवाह एक मादा फूल की बेल से किया जाता है जिसका लोक नाम 'सूणी' है। इस बेल को ब्याह कर पीपल के तने के साथ जमीन में लगा देते हैं।[२] यह विवाह लड़के-लडकी के विवाह की तरह ही किया जाता है।

पारिवारिक सम्बन्ध – परिवार समाज की महत्वपूण इकाई होता है। मनुष्य के लिए परिवार से बढ़कर अपनापन कहीं नहीं मिल सकता है विवाहित युगल के पारस्परिक प्रेम और सहयोग से मानव सृष्टि का विकास होता है। प्रस्तुत कहानी संग्रह में पति-पत्नी के संबंधों में प्रेम भी है और कड़वाहट भी **'मुट्ठी में गांव'** कहानी में मंगली के पास बेटा नहीं है। वह अपने घरवाले मोती को कितनी बार समझा चुकी है कि दूसरी ब्याह लाए। फिर भी मोती ऐसा नहीं करता वह कहता है कि बेटियां सबकुछ हैं।[३]

पिता के लिए अपनी सब सन्तान समान होती हैं लेकिन आज भी पिता अपनी पुत्री से ज्यादा पुत्र को प्रेम करता है। हरनोट की कहानी **'दरोश'** में दिखाया है जब कानन लड़कों की पिटाई करके घर आती है तो उसके पिता कानम की माँ को घसीट कर दरवाजे पर से कमरे में ले जाता है और कहता है-"देख लिया कुलटा अपनी छोकरी को। नाक कटा दी हमारी। जानती नहीं ऊपर से इलैक्शन का टाईम है।" कानम उनसे और अपेक्षा भी क्या करती? चुप नहीं रही। बोली, "अपनी रक्षा करना नाक कटवाना नहीं है। बड़े पिता। आपको तो गर्व होना चाहिए कि आपकी बेटी ने अपनी इज्जत बचाई है।"[४] दिखाया गया है कि कानम का पिता अपनी झूठी शान व इज्जत के लिए अपनी पुत्री-प्रेम को भूलकर उसे दांव पर लगा देता है। इसके अतिरिक्त एक रिश्ता माँ और बेटी का भी है। ये रिश्ता ऐसा होता है जो हर सुख-दुःख की बात को आपस में सांझा कर लेता है।

'दारोश' कहानी में कानम की माँ कानम से बहुत प्यार करती है। जब एक दिन कानम की माँ को उसकी चिट्ठी मिली तो उसमें लिखा था, "अम्मा। मैं तुम्हारे पास आ रही हूँ।" माँ पढ़ना नहीं जानती थी। चिट्ठी गांव के एक लड़के से पढ़वाई थी यह सुनकर एक पल के लिए माँ की खुशी का ठिकाना न रहा। परन्तु दूसरे ही पल माँ सिहर उठी। जिन परिसीमाओं और बंदिशों से कानम को दूर किया था, यह लौटकर उसी में चली आएगी।[५]

जहां कानम के गांव आने पर खुश है वहीं दूसरी ओर अपनी बेटी के लिए चिन्तित भी है क्योंकि वह डरती है गांव का प्रपंची माहौल कानम को कहीं छीन न ले।

सामाजिक संस्कृति – सामाजिक संस्कृति में हम हिमाचली लोगों के सामाजिक जीवन में लोकविश्वास, लोकमान्यताएं और सामाजिक कुरीतियों का वर्णन देख सकते हैं। प्रस्तुत संग्रह में समाज की बहुत प्रथाएं देखने को मिलती हैं। जैसे-जादू-टोना, बीमारी तथा पारिवारिक समस्या होने पर पशु बलि देकर देवता का प्रसन्न करना, शकुन-अपशकुन, बुरी नजर आदि का वर्णन मिलता लोगो की मान्यता यानि लोगों का अपना विश्वास। उनकी विभिन्न क्षेत्रों में मान्यताएं प्रचलित है।

• सहायक प्रो., हिन्दी विभाग, राजकीय महाविद्यालय, साहा

'कागभाखा' कहानी में बहू जब भी बीमार होती है या उसे जुकाम तक भी आ जाता है तो सारा आरोप दादी पर लगाती है और कहती है, "इसके पास तो जरूर कोई भूत-प्रेत है।" तभी वहां पेड़ पर आकर कौआ बोलने लगता है वह कांव-कांव करता रहता है। बहू उसे पत्थर से मारती है। जब कौआ बच बचाकर दूसरे पेड़ पर कांव-कांव करने लगता है। बहू बिदक जाती है कि जरूर कोई बुरा वक्त आने वाला है, " इस मरे को भी कर्ड-कर्ड मेरे घर के सामने ही करनी होती है।"[६]

'लाल होता दरख्त' कहानी के माध्यम से हरनोट ने स्पष्ट किया है कि पीपल का वृक्ष घर में होना बहुत ही शुभ का प्रतीक माना जाता है। इस कहानी में मुन्नी ने कई बार गांव-बेड़ के लोगों से सुना है "म्हारी जमीन में पीपल का जमणा कोई पिछले जनम के संस्कार हैं। भई कोली चमार होते तो मरने देते। बामणों के घर जन्म लेने का कुछ तो फायदा होना चाहिए।"[७]

एस.आर.हरनोट की कहानियों में हिमाचली लोगों का जादू-टोनो पर भी विश्वास दिखाया है उनके अनुसार जादू-टोने के द्वारा किसी भी व्यक्ति को कमजोर व शक्तिहीन बना दिया जाता है जबकि यह एक प्रकार का अंधविश्वास है जिसकी भावना लोगों में घर कर गई है। **'बिल्लियां बतियाती हैं'** कहानी में जब एक दिन अम्मा ने देखा कि बैल और भेड़ खूंटे से बंधे हुए इधर-उधर चारों तरफ घूम रहे हैं। अम्मा सोचने लगी कि बैल और भेड़ व अन्य पशुओं में कभी कोई लड़ाई न होती थी परन्तु आज अचानक से एक दूसरे से भिड़ रहे हैं और अम्मा को भी मारने दौड़ रहे हैं। फिर अम्मा समझ गई कि पशुओं पर जरूर किसी ने जादू टोना कर दिया है। वरना मजाल है जो अम्मा के पशु अम्मा की न सुने।[८]

समाज मे व्याप्त जातीय भेदभाव, सामाजिक शोषण, गरीबी, भ्रष्टाचार, स्त्रियों का शोषण आदि समस्याओं को समाज के विकास में घातक माना जाता है। जिन्हें सामाजिक कुरीतियों के नाम से अभिहित किया जाता है। जैसे उच्च जातियों के लोग निम्न जाति को घृणा की दृष्टि से देखते है व उनके प्रति आदर, सम्मान का भाव नहीं रखतें।

कहानी **'हिरख'** में दादा किशनू को बताते हैं कि उनके गांव में तीन बिरादरीयां हैं। एक उनकी, दूसरी हरिजनों की तीसरी सावदीन और बेसरदीन की। जब वह अपने पिता के पास रहता था तो किशनू के पिता उसे बाहर की बिरादरी से दूर रहने के लिए अवश्य सलाह देते कोई अगर उनके घर आता और चाय या पानी पिलाना पडता तो उसके लिए अलग बर्तन होते, उन्हें कभी भीतर नहीं जाने दिया जाता, रोटी भी कुत्ते की तरह दरवाजे पर दी जाती जबकि दादा के यहां उसने कभी ऊंच-नीच की बात नहीं दे[९]

'लाल होता दरख्त' कहानी के माध्यम से दिखाया है कि एक जमाना था मथरू की जमींदारी खूब हुआ करती थी। जमीन में खूब अनाज होता लेकिन गांव के साहूकारों ने गांव के लोगों की जमीनें रैहन रख ली थी। अब मथरू की रोजी-रोटी पंडिताई से चलती थी परन्तु गांव परगने में कई जजमान थे जिस कारण यह काम भी हाथ से जाने लगा। गरीबी में पीपल का और मुन्नी का विवाह करने की समस्या भी मथरू को सताने लगी थी।[१०]

हरनोट ने कहानियों के माध्यम से स्त्रियों व बच्चों के शोषण का भी वर्णन किया है। **'दारोश'** कहानी से कानम जब अखबार में एक खबर पड़ती है जिसमें लिखा है "तहसील के दो युवको ने अपने कुछ साथियों के सहयोग से गांव की एक लड़की को, जो उसकी सहेली के साथ पास के स्कूल में टूर्नामेंट देखने जा रही थी, जबरन उठा लिया। पास की गुफा में ले जाकर उससे सहवास किया" [११]

खान-पान - पहाड़ी क्षेत्र में सर्दियों में शुरू होने वाले विभिन्न उत्सव व तोशिम किम आदि के लिए पोल्टू, रोटे, चिल्टे, सुनपोले के विशिष्ट व्यंजन बनाए जाते हैं ये व्यंजन मीठे और स्वादिष्ट होते हैं। ये सभी व्यंजन आटे और मैदे के बने होते है जिसमें चीनी या गुड़ डालकर ये विशेष व्यंजन पकाए जाते हैं।प्रस्तुत कहानी संग्रह में कुछ कहानियों में दिखाया गया है कि बहुत से कहानी पात्र शराब का सेवन करते हैं। पहाड़ी क्षेत्रों में सर्दियों में विशेष उत्सवों पर अंगूरों से बनी शराब पीने का विशेष रिवाज है। ये लोग सर्दियों में पहले से ही शराब के स्टॉक जमा कर लेते हैं।हिमाचल क्षेत्र में लोग लस्सी का बहुत सेवन करते हैं। **'कागभाखा'** कहानी मे लोग खेतो में मक्कियों की गुड़ाई कर रहे हैं और दोपहर की रोटी खिलाई जा रही थी उसमें सभी को लस्सी और सत्तु (खिचड़ी की तरह बनाए जाने वाला भोजन) दिया जा रहा है।[१२]

सकरांत आने पर आटे या सूजी का मीठा परसाद बनाया जाता हैं जिसमें बादाम, नारियल, घी और मीठा डालकर बनाया जाता है। **'हिरख'** कहानी में दादा सकरांत पर कडाई परसाद बनाता है और किशनू को खाने को देता है तो किशनू मक्की की रोटी के साथ ऐसे खा जाता जैसे कोई सब्जी या दाल हो। और कहता "बई दादा मजा आ गया। भगवान ने एक महीने में ही क्यों साजी बनाई। रोज होती तो नंद-मंगल हो जाता।"[१३]

पहाड़ी क्षेत्र में रहने वाले लोग अधिकतर बकरे का और पक्षियों का मांस खाते है। ये लोग मुर्गे का और बकरे का मांस अधिक चाव से खाते हैं। **'मिस्त्री'** कहानी मे परसिये पंडत का मुर्गा गुम हो गया था। पंडत अपने भाई चिमने से आज तक इसी बात को लेकर लड़ाई करता है कि मुर्गा उसके बिल्ले ने खाया है जबकि मुर्गा मिस्त्री के साथ काम करने वाले लड़के रामू ने उबाल कर शराब के साथ खा लिया था।[१४]

लोकगीत - विभिन्न क्षेत्रो में रहने वाले लोगों के रीति-रिवाज भी भिन्न-२ होते हैं वे विभिन्न उत्सवों में अपनी अभिव्यक्ति गीतों के माध्यम से करते हैं। इन्हीं गीतो से संस्कृति की पहचान होती है। हिमाचल के पहाड़ी क्षेत्रों में लोकगीतों में विवाह के गीत अधिक लोकप्रिय हैं। विवाह का गीत का वर्णन हम **'कागभाखा'** कहानी में देख सकते हैं। जब दादी औरतों को ब्याह का गीत सुनाती है

"हरिए नी रसभरिए खजूरे, किने बे लाए ठण्डे बाग बे।

देखी लैणा बापू जी दा देश बे, बापू तो तेरा थोए गढ दिल्लिया दा राजा, अम्मा तेरी धीए गढ़ दिल्लियां दी राणी, उन पर ब्याह दिती बेटी दूर बे।"[१५]

आवास - प्रस्तुत कहानी संग्रह में हरनोट ने हिमाचल के लोगों का जीवन्त वर्णन किया है यहां के लोगों को गरीबी चारों ओर से घेरे रहती है। मकानों की हालत बहुत खराब है। बहुत कम लोग हैं जिनके घर पक्के हैं। अधिकतर लोग गांव में मिट्टी के घरों में रहते हैं।हिमाचल के पहाडी प्रदेश में रहने वाले लोग अपने घरों को गोबर से भी लीपते हैं।

'मुट्ठी में गांव' कहानी में मोती मिट्टी का बेहतर मिस्त्री है। वह बहुत ही कलात्मक घर बनाता है और गांव परगने में मोती द्वारा बनाए गए घर बहुत ही मशहूर भी हैं मजाल है कि कोई दूसरा मोती के मुकाबले मिट्टी के घर कूट जाए।[१६] लेखक ने अपनी कहानियों में पक्के घरों का भी वर्णन किया है।

'मिस्त्री' कहानी में मिस्त्री एक भला आदमी है उसके हाथ में सरस्वती है। लकड़ी और सीमेंट का वह अच्छा कारीगर है। गांव परगने में वही है जो आज भी खिड़की-दरवाजे पर बारीक नक्काशी करता है और गांव में बदरू चौधरी के यहां खेत के किनारे नई बन रही दीवार बनाने का काम वही कर रहा है।[१७]

व्यवसाय – रोटी, कपड़ा और मकान के बाद सभी अनेक प्रकार के रोजगार के साधन अपनाने पर बाध्य हैं। भिन्न-२ प्रकार के व्यवसाय कहीं उनके अपने पैतृक व्यवसाय के रूप में मिलते हैं तो कहीं पर कार्य-कुशलता एंव दक्षता द्वारा नया काम अपना लेते हैं।पहाड़ी क्षेत्रों में पशु पालन व्यवसाय का प्रमुख साधन है। **'बिल्लियां बतियाती हैं'** कहानी में अम्मा के ओवरे में एक जोड़ी बैल, दो भेड़ें हैं ओर बच्छियां बंधी रहती हैं। अम्मा गायों का दूध निकालती है और उसे बेचती है और इन्ही पशुओं के कारण वह अपना घर का खर्चा निकालती हैं।[१८]

हिमाचल पहाड़ी क्षेत्र होने के कारण अधिक ठंडा है सर्दियों में लोग ऊन से बने गर्म वस्त्र पहनते हैं। लेखक ने अपनी कहानी संग्रह में दिखाया है कि ऊन के पट्टू, मफलर और कोट बनाने में उन जैसा कारीगर कोई दूसरा नहीं और पट्टू को डेढ़-दो दिन में बुनकर तैयार कर देते हैं और फिर उन्हें बेचते हैं। खांरचों के घर में ढेर लगे रहते और सर्दियां आते ही उनकी खूब बिक्री होती और खूब पैसा इकठ्ठा होता।

हिमाचल के लोगो का मुख्य व्यवसाय खेतीवाड़ी है यहां के लोग अधिकतर खेती करते हैं, ये लोग धान की फसल व मक्की की फसल भी उगाते हैं और बेचते हैं। 'लाल होता दरख्त' कहानी में मथरू बताता है कि एक जमाना था जब मथरू की जमींदारी खूब चलती थी। उसके बाप-दादाओं ने खूब खेती छोड़ी थी। जमीन में जितना अनाज पैदा हुआ करता था कि बाहर से राशन लेने की जरूरत नहीं पड़ती थी।[१९]

हिमाचल के पहाड़ी क्षेत्रों में गांव में रहने वाले लोग मिट्टी के घर बनाने का काम भी करते हैं। मिट्टी से बने घर बहुत ही सुन्दर और कलात्मक होते हैं।

'मिस्त्री' कहानी में मिस्त्री लकडी और सीमेंट का अच्छा कारीगर है। बिल्कुल अनपढ है पर इतना अच्छा कारीगर है कि अच्छे-२ उसके आगे पानी भरते हैं। इसके बावजूद भी मिस्त्री ने अपनी परम्परा नहीं छोड़ीं। आज भी वह तीस से ऊपर दिहाड़ी नहीं लेता और काम भी बहुत अच्छा करता हैं।[२०]

निष्कर्ष – प्रस्तुत कहानी संग्रह में व्यक्त हिमाचली संस्कृति पर अध्ययन करने के बाद कहा जा सकता है कि हरनोट ने हिमाचल के आमजन की संस्कृति को सम्पूर्णता से अपने कहानी संग्रह 'दारोश तथा अन्य कहानियां' में उकेरा है। उनके जीवन के हर पहलू पर प्रकाश डाला गया है। प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध में हिमाचली संस्कृति से सम्बंधित सामाजिक, धार्मिक आर्थिक, पारिवारिक, रहन-सहन, रोजगार आदि आयामों का स्पष्टीकरण किया गया है।

समाज में पारिवारिक सम्बंधों, उनके पर्व एवं त्यौहारों का वर्णन किया गया है। साथ ही हिमाचल क्षेत्र में रहने वाले लोगों के जन जीवन में व्याप्त लोक विश्वास का भी चित्रण किया है। उनके खान-पान, रहन सहन एवं व्यवसाय से उनकी संस्कृति की अलग पहचान बनती है। वे विभिन्न देवी-देवताओ की पूजा करते हैं। सामान्य आमजन के लोग जादू-टोने, भूत प्रेतों में भी विश्वास रखते हैं।

संदर्भ –

1. लाल होता दरख्त, पृ.८१
2. लाल होता दरख्त, पृ.८१
3. मुट्ठी में गांव, पृ. १२२
4. दरोश, पृ. ११६
5. दारोश, पृ. ११२
6. कागभाखा, पृ. ५३
7. लाल होता दरख्त, पृ. ६६, ७०
8. बिल्लियां बतियाती हैं, पृ. १६
9. हिरख, पृ. ८६
10. लाल होता दरख्त, पृ. ७१
11. दारोश, पृ. १०६, १०६
12. कागभाखा, पृ. ५४
13. हिरख, पृ. ८६
14. मिस्त्री, पृ. १०१
15. कागभारवा, पृ. ५५
16. मुट्ठी में गांव, पृ. २२
17. मिस्त्री, पृ. ६६, १०२
18. बिल्लियां बतियाती हैं, पृ. ११
19. लाल होता दरख्त, पृ. ७१
20. मिस्त्री, पृ. ६६, १००

❖